International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(I), April - June, 2023, pp. 27-31

स्वदेशीयता एवं भूमण्डलीकरण : गाँधीवादी दृष्टिकोण

सुशील कुमार बसवाल*

सार

स्वदेशी का विचार गांधी जी के आर्थिक चिंतन में देखा जा सकता है। यह एक आध्यात्मिक अनुशासन भी है। जिसमें आत्मा पार्थिव बंधन से मुक्त विश्वात्मा के साथ एकाकार का भाव लिये हुए है। गांधी जी कहते है कि देश अपने अस्तित्व को तभी बचा सकता है जब वह मूल रूप से स्वदेशी को स्वीकार करे। अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज्य में स्वराज्य की ऐसी तस्वीर उन्होने बनायी जिसमें भूमण्डलीकरण जैसी आवधारणाओं को सीमित तरीके से समाहित किया गया। भूमण्डलीकरण एकरूपता और समरूपता की वह प्रक्रिया जिसमें देश की सीमाए समाप्त हो जाती है। और सम्पूर्ण विश्व एक हो जाता है।

शब्दकोश: *भूमण्डलीकरण, स्वदेशीयता, स्वराज्य, विश्वात्मा, पार्थिव बंधन।*

प्रस्तावना

स्वेदशी वास्तव में उदात्त देशभक्ति का सिद्धांत है। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ अपने देश से संबंधित राजनीतिक धरातल पर राष्ट्रवाद है। स्वदेशी के संबंध में गाँधी जी की धारणा व्यक्ति के जीवन को धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक धरातल पर बांधती है। गाँधी जी इसे एक अनुशासन मानते है। यह स्वदेशीयता गाँधी जी की मौलिक देन है। इसका आधार गीता का स्वधर्म और बाइबिल का लव दाई नेबर है। इसके महत्व को देखकर गाँधी जी ने इसे व्रत व धर्म का रूप दिया व्यापक अर्थ में स्वदेशी का विचार गाँजी जी के आर्थिक चिंतन में माना जाता है। स्वदेशी विचार से देशी अद्योगों को नया जीवन मिला। गाँधी ने स्वदेशीयता से उग्रराष्ट्रवाद के तत्व को निकालकर इसे मानवतावादी और आध्यात्मिक रूप प्रदान किया।

वस्तुतः स्वदेशीयता एक भावात्मक प्रत्यय है। यह सार्वभौम का शिखर है। यह अहिंसा और प्रेम का पर्याय है। स्वदेशी एक अहिंसात्मक अवधारणा है "स्वदेशी धृणा और विद्वेष का विचार नहीं अपितु स्वार्थरहित सेवा का सिद्धांत है। जिसे हम प्रेम कहते है।" स्वदेशी एक जीवन दृष्टि है। जिसका मूल आधार सत्य, अहिंसा, प्रेम, करूणा और रोटी के लिए श्रम जैसी अवधारणा है।

स्वदेशीयता की अवधारणा को निम्न आधारों पर परखा जा सकता है।

- स्वदेशी एक जीवन मूल्य
- स्वदेशी की केन्द्रीय इकाई ग्राम
- स्वदेशीयता और स्वराज

* सहायक आचार्य – राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय सिकराय, दौसा, राजस्थान।

- वैकल्पिक उत्पादन शैली व तकनीक
- गाँधी जी द्वारा स्वदेशीयता की सम्पूर्ण अवधारणा को प्राप्त करने का प्रयास भारतीय स्वाधीनता संग्राम के गर्भ में शुरू कर दिये थे।
- गुलामी की मानसिकता का परित्याग
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
- ग्राम विकास के रचानात्मक कार्यक्रम
- हरिजन उद्धार आंदोलन
- खादी एव कुटीर उद्योगों का विस्तार

भुमण्डलीकरण वस्तुतः व्यापारिक क्रिया कलापों विशेषकर विपणन संबंधि क्रियाओं का अन्तर्राष्ट्रीयकरण करना है। जिसमें सम्पूर्ण विश्व बाजार को एक ही क्षेत्र के रूप में देखा जाता है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में विश्व बाजारों के मध्य पारस्परिक निर्भरता उत्पन्न होती है। और व्यापार देश की सीमाओं में प्रतिबंधित न रहकर विश्व व्यापार में निहित तुलनात्मक लागत लाभ दशाओं का विदोहन करने की दशा में अग्रसर होता है।

भूमण्डलीकरण कों गॉव के रूप में मानने की अवधारणा में निम्न तत्व सम्मिलित है।

संसार के विभिन्न देशों में बिना किसी अवरोध के विभिन्न वस्तुओं का आदान प्रदान सम्भव बनाने के लिए अवरोधों को कम करना।

- आधुनिक प्रौधोगिकी का निर्बाध प्रवाह संम्भव बनाने हेतु उपयुक्त वातावरण बनाना।
- विभिन्न राष्ट्रों में पूँजी का स्वतंत्र प्रवाह बनाने हेतु आवश्यक परिस्थितियाँ पैदा करना
- संसार के विभिन्न देशों में श्रम की निर्बाध प्रवाह को सम्भव बनाना।

अतः भूमण्डलीकरण राष्ट्रों की राजनीति सीमाओं के आर–पार आर्थिक लेन देन की प्रक्रियाओं और उनके प्रंबधन का प्रवाह है। विश्व अर्थव्यवस्था में आया खुलापन, आपसी जुडाव और परस्पर निर्भरता के फैलाव को भूमण्डलीकरण कहा जाता है।

साहित्य समीक्षा

देबेन्द्र के दास ने अपनी पुस्तक "ग्लोबलाइजेशन एण्ड डवेलपमेंट एक्सपीरियन्सेज एण्ड चैलेंज (1999)में लिखा है कि स्वतंत्रता के पाँच दशको के बाद बढते भमण्डलीकरण की वजह से कई तरह के आयाम व परिस्थितियां हमारे सामने पैदा हुई है विज्ञान, कृषि, तकनीक, नीति निर्माण, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण सभी क्षेत्रों की तरह तरह के बदलाव आए है जिनमें कुछ जहाँ लाभदायक है वही कुछ दीर्घकालिक दृष्टि से नुकसानदायक भी है इस संपादकीय पुस्तक में भूमण्डलीकरण के सभी पक्षों पर विचार दिया गया है।

आर.के.पांचाल ने अपनी पुस्तक "ग्लोबलाइजेशन इट्स इम्पक्ट ऑन रूरल डवेलपमेंट" (2006) में भूमण्डीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन ग्रामीण विकास की अवधारणा के साथ जोडकर किया। यह धारणा गांधी अध्ययन से कुछ साम्य माना था पांचाल जी ने एक खुली भमण्डलीय समाज की कल्पना को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

सुधीश पचौरी ने अपनी पुस्तक "भूमण्डलीकरण और उत्तर सांस्कृतिक विमर्श (2003) में भूमण्डलीकरण को वर्तमान सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था उन्होने भूमण्डलीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में इसकी अनिवार्यता व इससे सम्बन्धित चलने वाले वाद विवादों पर भी प्रकाश डाला है। सुधीश पचौरी द्वारा अपनी पुस्तक में यह बताने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार भूमण्डलीकरण प्रत्येक संस्कृति को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है।

अध्ययन उद्देश्य

गांधी दृष्टिकोण जहां स्वदेशी की बात करता है वही व्यापक अर्थ में वसुधैव कुटुम्बकम के आदर्श का भी अपने सामने रखता है इस अध्ययन में निम्नांकित उदेश्यों पर गहन विश्लेषण का प्रयास किया जायेगा।

- गांधी चिंतन में स्वदेशी धारणा का अवधारणात्मक विश्नेषण।
- स्वदेशी अवधारणा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
- गांधी चिंतन व गांधी जीवन में स्वदेशी की धारणा का विकास।
- वर्तमान में स्वदेशी के संबंध में गांधी चिंतन की प्रांसगिकता।
- भूमण्डलीकरण की अवधारणा का विश्लेषण।
- भूमण्डलीकरण के प्रभावों संभावनोओं व चुनौतियां की पक्ष व विपक्ष का विश्लेषण।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध के आयाम सैंद्धान्तिक है और विषयानुरूप ही अध्ययन पद्धति का चयन किया गया है। विषय के सैंद्धान्तिक व वर्णनात्मक आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन के माध्यम से पूर्णता प्रदान की चेष्टा की जाएगी। सैंदान्तिक पक्षों के विश्लेषण के लिए द्वितीयक स्त्रोतों पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों, संपादकीय लेखों, शोध ग्रन्थो, शोध पत्रिकाओं तथा सम्पूर्ण गांधी वाड्मय के विभिन्न खण्डों का गहन व विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

स्वदेशी बनाम भूमण्डलीकरण वर्तमान चुनौतियाँ

भारतीय समाज की सबसे बडी विडम्बना है कि हम आदर्श के आकाश में उडते है, यथार्थ की भूमि का स्पर्श नहीं करते। जिन आदर्शो के कारण भारत की ऐतिहासिक प्रशस्ति का मार्ग सिद्ध हुआ वे आज जीवन में नहीं है।

- राष्ट्रीय चेतना वर्तमान में राजनीति से पीड़ित है।
- भूमण्डलीकरण का प्रभाव इतना व्यापक हो गया है कि हमारा व्यवहार, रहन सहन, खान पान सभी में अंग्रेजीयता और पश्चिमी मानसिकता शामिल हो गयी है। जिससे हमारा वर्तमान समाज दौहरी जीवन शैली में उलझकर रह गया है।
- आज हम स्वतंत्र अर्थव्यवस्था और भूमण्डलीय अर्थव्यवस्था के नाम पर अन्तराष्ट्रीय कम्पनियों को इतनी छुट दे दि है। कि वे स्वदेशी उद्योगों का तो गला घोट रही है साथ–साथ देशवासियों को नये प्रकार से गुलामी सिखायी जा रही है।
- वर्तमान में राष्ट्रीय अस्मिता पर आर्थिक उपनिवेशवाद खतरा मंडरा रहा है।

स्वदेशीयता : एक विकल्प

बहुराष्ट्रीय कम्पनी उत्पादन के सामने स्वदेशी कम्पनियां गुणात्मक एवं मात्रात्मक आधार पर नहीं टिक सकती तो स्वदेशी का अर्थ घटिया माल का उत्पादन हुआ अच्छे माल के लिए स्वदेशीयता में निम्न तीन तत्वों का समावेश आवश्यक है।

- हमे अपने उद्यमियों के बीच घरेलू प्रतिस्पर्धा को बढाना चाहिए।
- अपनी आपूर्ति पूर्ण करने के लिए आयत को भी बढाया जा सकता है।
- जब दोनो उपाय व्यवस्था को सुव्यवस्थित नहीं कर पाये तो विदेशी निवेश माल भी अपनाया जा सकता है।

इस प्रक्रिया से न तो देश में निवेश बढा और न ही रोजगार लम्बे समय के लिए हो पाये अतः स्वदेशी का अर्थ घरेलू प्रतिस्पर्धा और अधिक से अधिक खुला व्यापार है। गाँधी जी और भूमण्डलीकरण बिलकुल

विरोधाभासी नहीं है यदि उनकी मूल भावना स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की व विश्व समाज की आवश्यकताओं को पूरी करने की हों। इसके अतिरिक्त भूमण्डलीकरण के दुष्परिणामों को भी अगर देखा जाए तो हम कह सकते है कि इसके दुष्परिणामों से बचने का मार्ग भी हमे गाँधीय दर्शन के स्वदेशीयता में दिखाई देता है।

भूमण्डलीकरण : गाँधीवादी दृष्टिकोण

गहन अध्ययन में हम पाएगें की गाँधी वास्तव में एक वैश्विक व्यक्ति थे। उनका दायरा कभी संकीर्ण नहीं रहा। उनकी शिक्षा लंदन में हुई, उन्होंने साउथ अफ्रिका में अपनी राजनीतिक क्रियाविधियों का श्रीगणेश किया और उन्होंने जब भारतीय राजनीति में प्रवेश किया तब वह कई पाश्चात्य चिन्तको जैसे टालस्टाय, थूरो और रस्किन से वह अत्यधिक प्रभावित रहें। कई बार उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेता के रूप में रेखांकित किया जाता है। लेकिन उनकी राष्ट्रीयता ने सम्पूर्ण जगत की मानवता को प्रभावित किया। इसलिए बाद में विनोबा ने जय हिन्द को जय जगत के शब्दो में परिवर्तित कर दिया।

उनका कहना था कि "हमारे सबसे बडे शत्रु विदेशी नहीं है न ही हम खुद अपितु हमारे शत्रु हम खुद ही है हमारी अनियंत्रित इच्छाऐं हमें दयनीय बनाती है।" गाँधी के भूमण्डलीकरण से तात्पर्य दुनिया के किसी भाग में रहने वालो की एकता से था। उनके अनुसार भारतीय सभ्यता की विशेषता यह है कि भारतीय संस्कृति सभी संस्कृतियों को अपने में समाहित रखने की योग्यता रखती है न कि भूमण्डल के स्त्रोतों के अंधाधुंध दोहन व उपयोग की भावना है।

गाँधी के लिए भूमण्डलीकरण का सार था श्जीपदा हसवइंससलए बज सवबंससलए जबकि आधुनिक भूमण्डलीकरण का सार है 'Act globally, think locally".

गाँधी ने छोटे और विकेन्द्रित शासन व्यवस्था पर जोर दिया, जो उदार विचारों पर आधारित है। गाँधी आवश्यकता अनुसार उत्पादन पर जोर देते थे। वह सहयोग व समन्वय के सिद्धांत पर अत्यधिक जोर देते है जबकि आजकल लाभ कमाने पर अत्यधिक जोर दिया जाता है।

गाँधी जी प्राचीन भारतीय सभ्यता संस्कृति के मानकों की सुरक्षा में विश्वास रखते थे। भारत का विश्व समुदाय के साथ एकीकरण विशेष 20 वीं शताब्दी के दशक में अत्यधिक रहा क्योंकि पाश्चात्य सांस्कृतिक संगठनों व समुहों का प्रभाव यहाँ अत्यधिक रहा और अन्य विकासशील देशों की तरह भारत भी सुविधा भोगी वस्तुओं व आधुनिक तकनीकों का अत्यधिक प्रयोग कर रहा है। ऐसा नहीं है कि गाँधी पाश्चात्य सभ्यता के विरूद्ध थे पर वे उस मानसिकता के जो पश्चिमी सभ्यता को भारतीय सभ्यता से अधिक श्रेष्ठ मानती थी गाँधी उसके विरूद्ध थे।

एक क्षेत्र गाँधीय दर्शन पूरी तरह से भुला दिया गया है वह है हिंसा के फैलाव। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से ही विभिन्न तरह के टकराव, मतभेद, शीतयुद्ध सामने आते रहे है। 9/11 की घटना भूमण्डलीकरण आंतकवाद का ही परिणाम थी। हिंसा की घटनाऐं सम्पूर्ण विश्व की तेजी से फैल रही है।

निष्कर्ष

किसी देश के विकास के लिए स्वदेशी और भूमण्डलीकरण जैसी अवधारणाओं का खासा महत्व है। अगर किसी भी अवधारणा का ज्यादा प्रयोग किया गया तो उस देश का विकास अवरूद्ध हो जाएगा। जबकि सीमित अर्थो में दोनो अवधारणाऐं अगर प्रयोग में लायी जाती है। तो वह देश विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर हो कर अपने आयामों को प्राप्त कर सकता है। गांधी जी द्वारा भूमण्डलीकरण के विस्तृत रूप के स्थान पर स्वदेशीयता को वरीयता दी गयी उनका मानना था कि तेज गति से विकास के स्थान पर धीरे–धीरे होने वाले उचित परिवर्तन देश के विकास के लिए आवश्यक है। गांधी जी कहते है कि भारत का भविष्य गांवो में बसता है। जिन्हे एक जुट करने के लिए भूमण्डलीकरण के स्थान पर स्वदेशीयता की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, मीनू इपेक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन, ऑन डवलपमेन्ट, दीप एण्ड डीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2008)
2. बोस. एन. के :– सोशल एण्ड सलेक्शन फ्रॉम गाँधी", नवजीवन पब्लिकेशन हाउस अहमदाबाद 1957
3. चन्द्रा विपिन :– कम्यूनेलिज्म इन मॉडर्न इण्डियाँ", विकास पब्लिशिंग हाउस दिल्ली 1984
4. देशपाण्डे, अश्विनी ग्लोबलाइजेशन एण्ड डवेलपमेन्ट, आक्सफोर्ड यनिवसिटी प्रेस (2002)
5. दत्ता डी.एमः द फिलॉसाफी ऑफ महात्मा गाँधी द युनिर्वसिटी ऑफ विसकोन्सीन प्रेस, मडीसन, 1953
6. दिवाकर रंगनाथः सत्याग्रह और विश्व शांति प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली 15949
7. फिशर लुई, द लाइफ ऑफ महात्मा गांधी जोनेथन केप, लन्दन 1957
8. गांधी एम. के – द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंटस विद टूथ नवजीवन पब्लिकेशन हाउस अहमदाबाद1993
9. गांधी एम के – मेरे सपनो का भारत नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1962
10. गांधी, एम के – "धर्मनीति सस्ता साहित्य मण्डल, इलाहाबाद 2002
11. गुप्ता नगेन्द्रनाथः– गांधी एण्ड गांधीज्म हिन्द किताब महल, बम्बई 1948
12. कृपलानी, जे.बी. – गांधी हिज लाइफ एण्ड थॅट पब्लिकेशन छिवीजन, दिल्ली 1970
13. मित्र शिशिर कुमार – द विजन ऑफ इण्डिया 8 जेको पब्लिशिंग हाउस कलकत्ता 1943
14. टैगोर रवीन्द्रनाथ – महात्माजी एण्ड द डिप्रेस्ट ह्यूमिनिटी विश्व भारती कलकत्ता 1932
15. नेहरू जवाहरलाल – द डिस्वकरी ऑफ इण्डिया मेरीडियन बुक लि. लंदन 1951

❖◆❖